



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कुंडली मिलान

SANJAY SHARMA

15/8/1990 10:30AM
Mumbai, Maharashtra India



SANJAY SHARMA

15/8/1990 10:30AM
Mumbai, Maharashtra India

vedicrishi



कुंडली मिलान का महत्व



ज्योतिष शास्त्र, विश्व में और प्रत्येक प्राणी की जीवनधारा में हर पल घटने वाली संभाव्य घटनाओं का अनुमान के आधार पर संभाव्य विवरण प्रस्तुत करता है। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश हेतु विवाह आवश्यक है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार किसी जातक की प्रकृति, अभिरुचि, उसका व्यक्तित्व और उसका व्यवहार उसके जन्म नक्षत्र और राशी के आधार पर निर्धारित होता है। इसी आधार पर वर-वधु के जन्म नक्षत्र और जन्म राशी का मिलान करना गुण मिलान कहलाता है। गुण मिलान के आधार पर जाना जाता है कि दोनों में परस्पर कैसा सम्बन्ध रहेगा।

कुंडली मिलान एक प्राचीन प्रणाली है जिसके द्वारा संभावित वर-वधु के आपसी तालमेल का आकलन किया जाता है। वर-वधु के वैवाहिक जीवन को सुखद और अनुकूल बनाने के लिए यह पहला कदम होता है। विवाह के उपरांत वर/कन्या को भविष्य में समस्याओं का सामना न करना पड़े इसलिए विवाह पूर्व वर/कन्या के माता-पिता, दोनों की जन्मकुण्डली का मिलान करवाते हैं, जोकि अति आवश्यक है।

प्रस्तुत कुंडली मिलान रिपोर्ट में सभी प्रमुख जन्मपत्रिका मिलान के विधियों का प्रयोग एवं विश्लेषण किया गया है। इनमें अष्टकूट मिलान, दशकूट मिलान, मांगलिक मिलान, रज्जु व वेध दोष विश्लेषण के साथ ही उनके फल भी दिए गए हैं।

सामान्य विवरण

| Sanjay | गुण | Sanjay |
|-----------|-------------|-----------|
| 15/8/1990 | जन्म दिनांक | 15/8/1990 |
| 10:30 | जन्म समय | 10:30 |
| 39 N 57 | अक्षांश | 39 N 57 |
| -75 W -9 | देशांतर | -75 W -9 |
| -05:00 | समय क्षेत्र | -05:00 |
| 5:12:5 | सूर्योदय | 5:12:5 |
| 18:57:28 | सूर्यास्त | 18:57:28 |
| 23:43:33 | अयनांश | 23:43:33 |

ज्योतिषीय विवरण



| Sanjay | गुण | Sanjay |
|------------|----------------|------------|
| वैश्य | वर्ण | वैश्य |
| चतुष्पद | वश्य | चतुष्पद |
| सर्प | योनि | सर्प |
| देव | गण | देव |
| मध्य | नाड़ी | मध्य |
| शुक्र | राशि स्वामी | शुक्र |
| मृगशिरा | नक्षत्र | मृगशिरा |
| मंगल | नक्षत्र स्वामी | मंगल |
| 1 | चरण | 1 |
| हर्षण | योग | हर्षण |
| विष्टि | करण | विष्टि |
| कृष्ण दशमी | तिथि | कृष्ण दशमी |
| पूर्वा | युञ्जा | पूर्वा |
| पृथ्वी | तत्त्व | पृथ्वी |
| वे | नामाक्षर | वे |
| लोहा | पाया | लोहा |

ग्रह स्थिति

Sanjay ग्रह स्थिति

| ग्रह | वक्री | जन्म राशि | अंश | राशि स्वामी | नक्षत्र | नक्षत्र स्वामी | भाव |
|--------|-------|-----------|----------|-------------|----------------|----------------|-----|
| सूर्य | -- | कर्क | 28:48:55 | चन्द्र | अश्लेषा | बुध | 10 |
| चन्द्र | -- | वृष | 25:10:08 | शुक्र | मृगशिरा | मंगल | 8 |
| मंगल | -- | मेष | 27:44:20 | मंगल | कृत्तिका | सूर्य | 7 |
| बुध | -- | सिंह | 25:46:49 | सूर्य | पूर्व फाल्गुनी | शुक्र | 11 |
| गुरु | -- | कर्क | 05:42:01 | चन्द्र | पुष्य | शनि | 10 |
| शुक्र | -- | कर्क | 08:22:36 | चन्द्र | पुष्य | शनि | 10 |
| शनि | R | धनु | 26:07:23 | गुरु | पूर्व षाढ़ा | शुक्र | 3 |
| राहु | R | मकर | 12:43:49 | शनि | श्रावण | चन्द्र | 4 |
| केतु | R | कर्क | 12:43:49 | चन्द्र | पुष्य | शनि | 10 |
| लग्न | -- | तुला | 01:04:01 | शुक्र | चित्रा | मंगल | 1 |

Sanjay ग्रह स्थिति

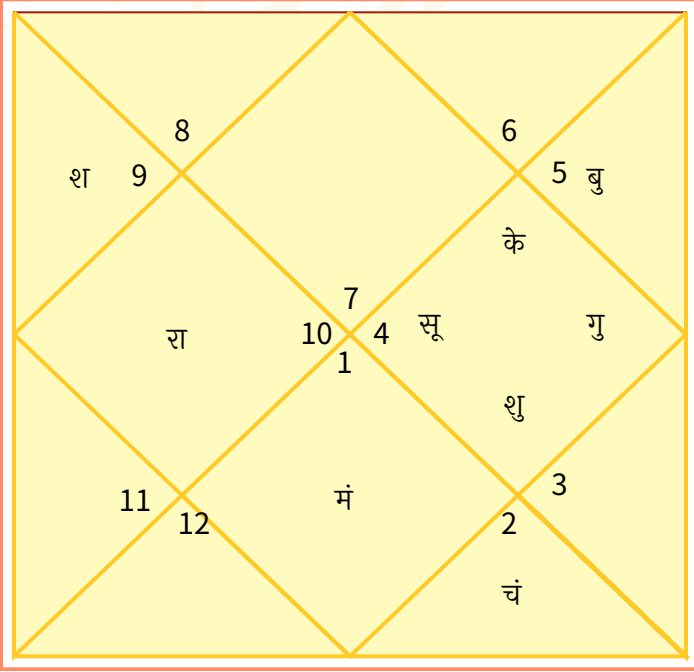
| ग्रह | वक्री | जन्म राशि | अंश | राशि स्वामी | नक्षत्र | नक्षत्र स्वामी | भाव |
|--------|-------|-----------|----------|-------------|----------------|----------------|-----|
| सूर्य | -- | कर्क | 28:48:55 | चन्द्र | अश्लेषा | बुध | 10 |
| चन्द्र | -- | वृष | 25:10:08 | शुक्र | मृगशिरा | मंगल | 8 |
| मंगल | -- | मेष | 27:44:20 | मंगल | कृत्तिका | सूर्य | 7 |
| बुध | -- | सिंह | 25:46:49 | सूर्य | पूर्व फाल्गुनी | शुक्र | 11 |
| गुरु | -- | कर्क | 05:42:01 | चन्द्र | पुष्य | शनि | 10 |
| शुक्र | -- | कर्क | 08:22:36 | चन्द्र | पुष्य | शनि | 10 |
| शनि | R | धनु | 26:07:23 | गुरु | पूर्व षाढ़ा | शुक्र | 3 |
| राहु | R | मकर | 12:43:49 | शनि | श्रावण | चन्द्र | 4 |
| केतु | R | कर्क | 12:43:49 | चन्द्र | पुष्य | शनि | 10 |
| लग्न | -- | तुला | 01:04:01 | शुक्र | चित्रा | मंगल | 1 |

जन्म कुंडली

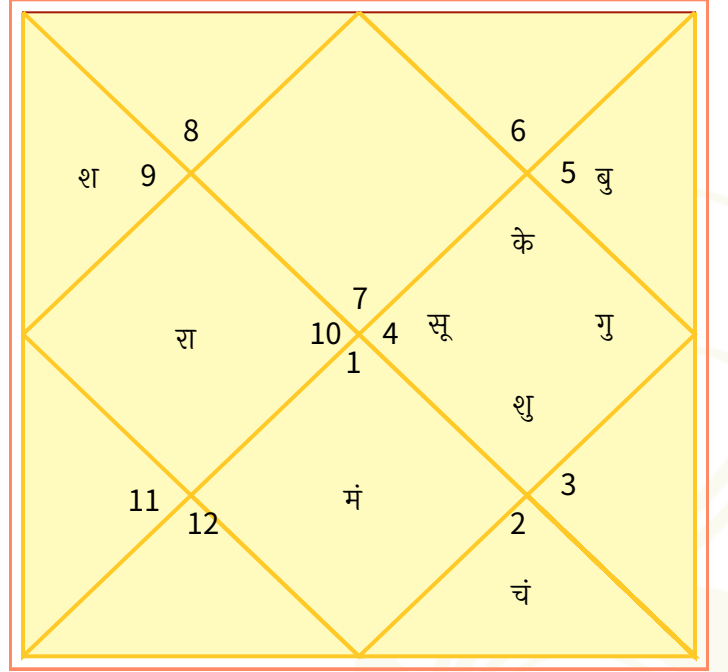
लग्न कुंडली



Sanjay



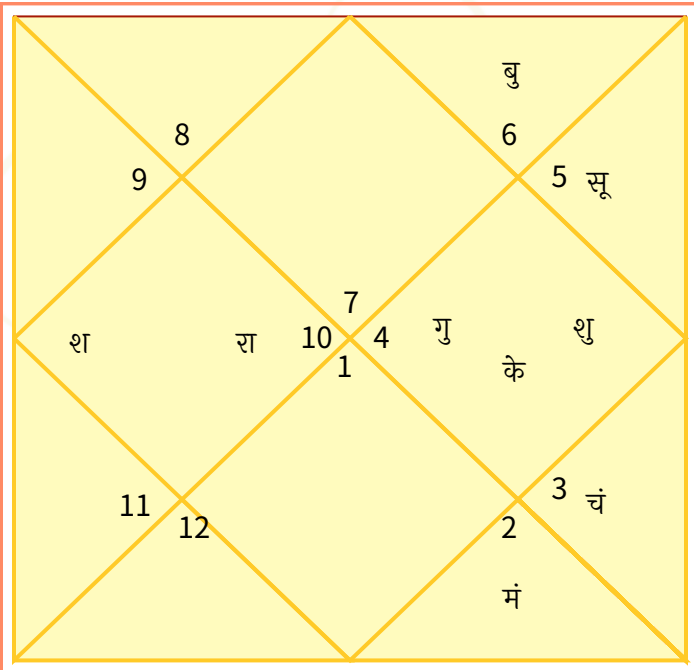
Sanjay



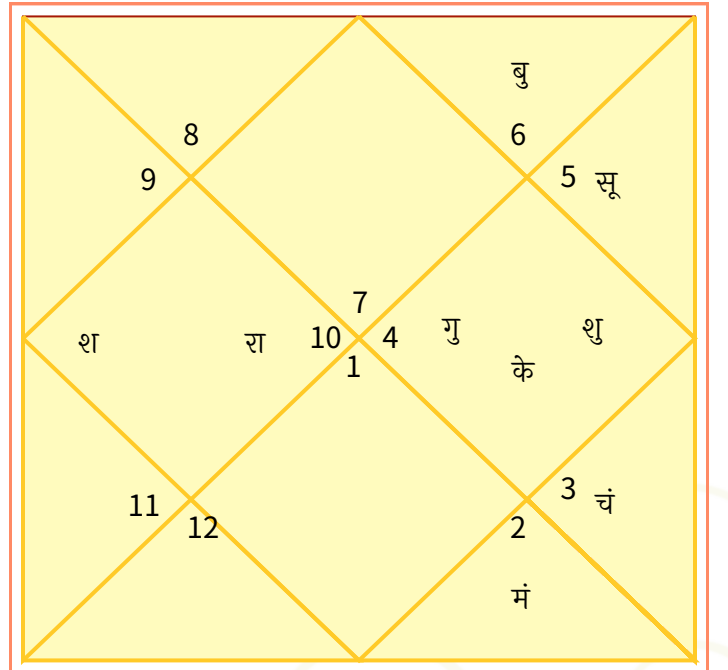
चलित कुंडली



Sanjay



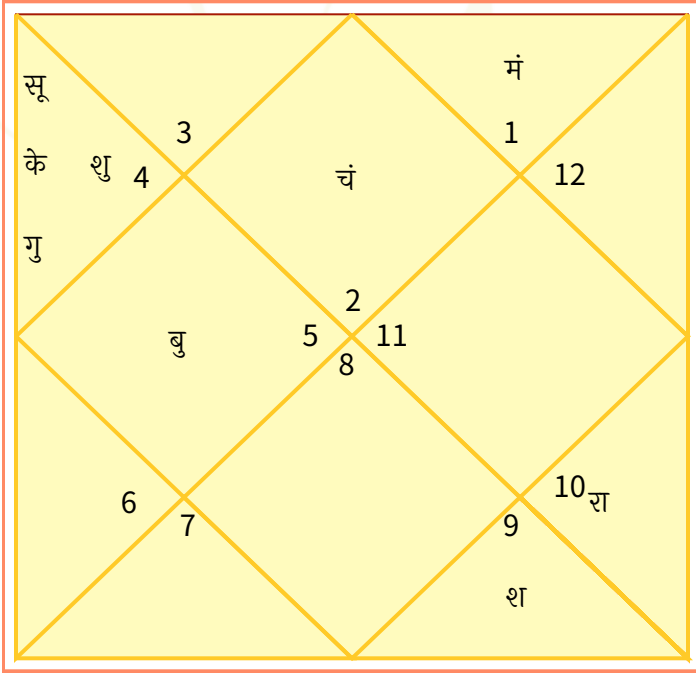
Sanjay



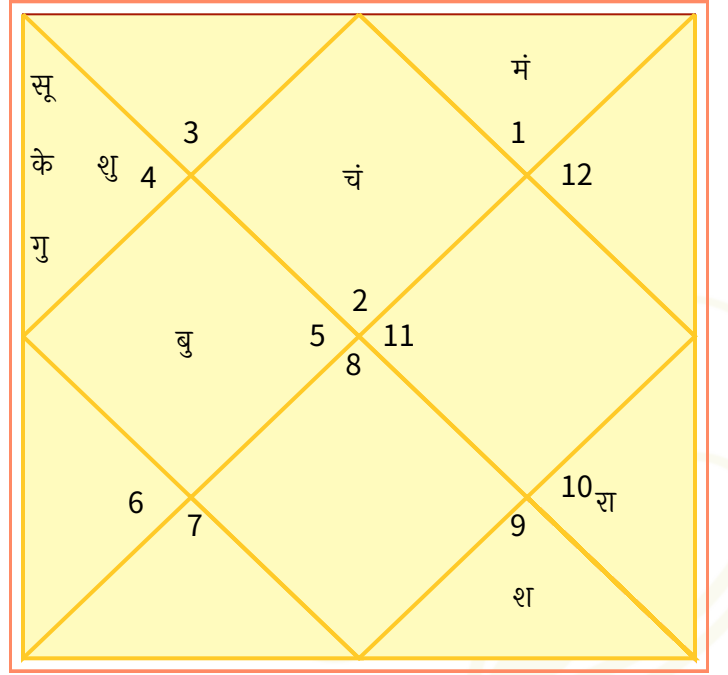
चंद्र कुंडली



Sanjay



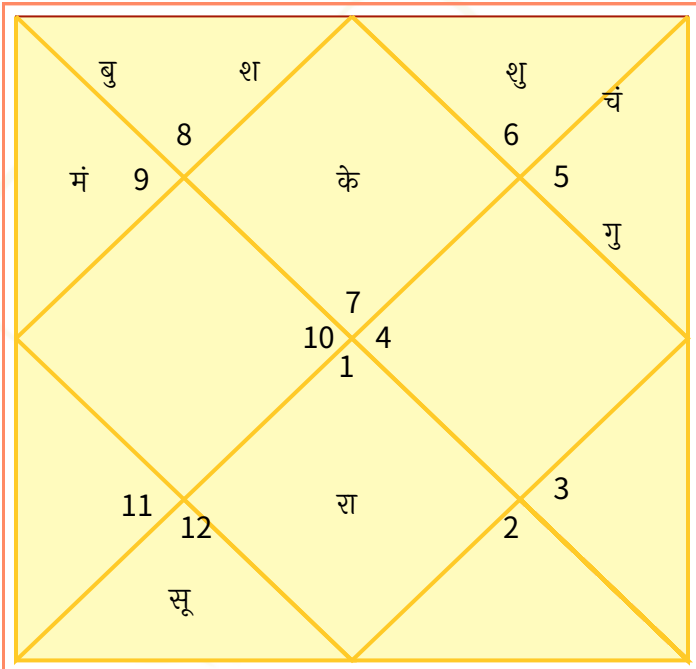
Sanjay



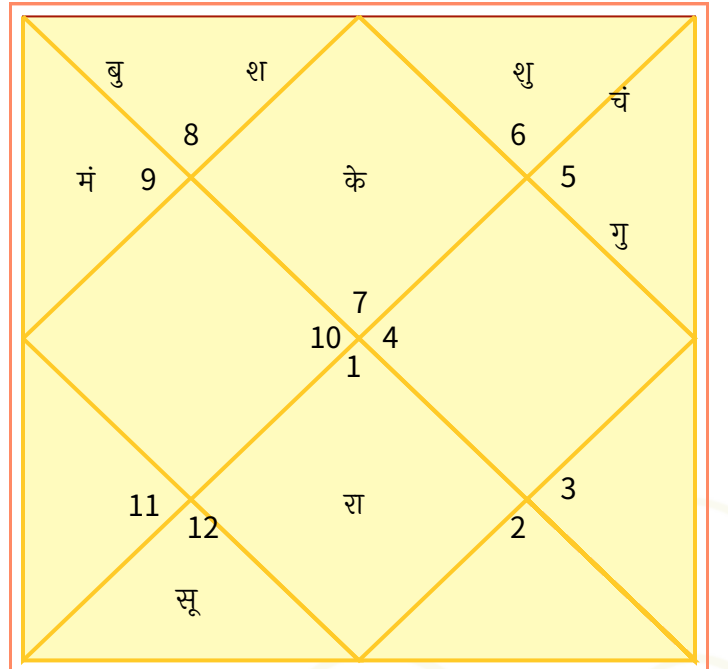
नवमांश कुंडली



Sanjay



Sanjay



Sanjay - विम्शोत्तरी दशा

वर्तमान दशा



महादशा

अंतर दशा

प्रत्यंतर दशा

--

गुरु

गुरु > चन्द्र

| | |
|--------|------------------|
| मंगल | 28-08-1996 03:53 |
| राहु | 28-08-2014 15:53 |
| गुरु | 28-08-2030 15:53 |
| शनि | 28-08-2049 09:53 |
| बुध | 28-08-2066 15:53 |
| केतु | 28-08-2073 09:53 |
| शुक्र | 28-08-2093 09:53 |
| सूर्य | 28-08-2099 21:53 |
| चन्द्र | 29-08-2109 09:53 |

| | |
|--------|------------------|
| गुरु | 15-10-2016 20:41 |
| शनि | 29-04-2019 03:53 |
| बुध | 04-08-2021 01:29 |
| केतु | 10-07-2022 23:05 |
| शुक्र | 10-03-2025 23:05 |
| सूर्य | 28-12-2025 03:53 |
| चन्द्र | 29-04-2027 03:53 |
| मंगल | 04-04-2028 01:29 |
| राहु | 28-08-2030 15:53 |

| | |
|--------|------------------|
| चन्द्र | 06-02-2026 17:53 |
| मंगल | 07-03-2026 03:41 |
| राहु | 19-05-2026 04:53 |
| गुरु | 23-07-2026 03:17 |
| शनि | 08-10-2026 05:53 |
| बुध | 16-12-2026 05:41 |
| केतु | 13-01-2027 15:29 |
| शुक्र | 04-04-2027 19:29 |
| सूर्य | 29-04-2027 03:53 |

सूक्ष्म दशा

गुरु > चन्द्र > गुरु

| | |
|--------|------------------|
| गुरु | 27-05-2026 20:40 |
| शनि | 07-06-2026 03:25 |
| बुध | 16-06-2026 08:12 |
| केतु | 20-06-2026 03:06 |
| शुक्र | 30-06-2026 22:50 |
| सूर्य | 04-07-2026 04:45 |
| चन्द्र | 09-07-2026 14:37 |
| मंगल | 13-07-2026 09:32 |
| राहु | 23-07-2026 03:17 |



प्राण दशा

गुरु > चन्द्र > गुरु > चन्द्र

| | |
|--------|------------------|
| चन्द्र | 04-07-2026 15:35 |
| मंगल | 04-07-2026 23:09 |
| राहु | 05-07-2026 18:38 |
| गुरु | 06-07-2026 11:57 |
| शनि | 07-07-2026 08:31 |
| बुध | 08-07-2026 02:54 |
| केतु | 08-07-2026 10:29 |
| शुक्र | 09-07-2026 08:08 |
| सूर्य | 09-07-2026 14:37 |

Sanjay - विम्शोत्तरी दशा

वर्तमान दशा



महादशा

अंतर दशा

प्रत्यंतर दशा

--

गुरु

गुरु > चन्द्र

| | |
|--------|------------------|
| मंगल | 28-08-1996 03:53 |
| राहु | 28-08-2014 15:53 |
| गुरु | 28-08-2030 15:53 |
| शनि | 28-08-2049 09:53 |
| बुध | 28-08-2066 15:53 |
| केतु | 28-08-2073 09:53 |
| शुक्र | 28-08-2093 09:53 |
| सूर्य | 28-08-2099 21:53 |
| चन्द्र | 29-08-2109 09:53 |

| | |
|--------|------------------|
| गुरु | 15-10-2016 20:41 |
| शनि | 29-04-2019 03:53 |
| बुध | 04-08-2021 01:29 |
| केतु | 10-07-2022 23:05 |
| शुक्र | 10-03-2025 23:05 |
| सूर्य | 28-12-2025 03:53 |
| चन्द्र | 29-04-2027 03:53 |
| मंगल | 04-04-2028 01:29 |
| राहु | 28-08-2030 15:53 |

| | |
|--------|------------------|
| चन्द्र | 06-02-2026 17:53 |
| मंगल | 07-03-2026 03:41 |
| राहु | 19-05-2026 04:53 |
| गुरु | 23-07-2026 03:17 |
| शनि | 08-10-2026 05:53 |
| बुध | 16-12-2026 05:41 |
| केतु | 13-01-2027 15:29 |
| शुक्र | 04-04-2027 19:29 |
| सूर्य | 29-04-2027 03:53 |

सूक्ष्म दशा

गुरु > चन्द्र > गुरु

| | |
|--------|------------------|
| गुरु | 27-05-2026 20:40 |
| शनि | 07-06-2026 03:25 |
| बुध | 16-06-2026 08:12 |
| केतु | 20-06-2026 03:06 |
| शुक्र | 30-06-2026 22:50 |
| सूर्य | 04-07-2026 04:45 |
| चन्द्र | 09-07-2026 14:37 |
| मंगल | 13-07-2026 09:32 |
| राहु | 23-07-2026 03:17 |

प्राण दशा

गुरु > चन्द्र > गुरु > चन्द्र

| | |
|--------|------------------|
| चन्द्र | 04-07-2026 15:35 |
| मंगल | 04-07-2026 23:09 |
| राहु | 05-07-2026 18:38 |
| गुरु | 06-07-2026 11:57 |
| शनि | 07-07-2026 08:31 |
| बुध | 08-07-2026 02:54 |
| केतु | 08-07-2026 10:29 |
| शुक्र | 09-07-2026 08:08 |
| सूर्य | 09-07-2026 14:37 |



मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलिक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर

मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते हैं। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वांगिण को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

मांगलिक दोष प्रभाव

मंगल ग्रह की पहले भाव में स्थिति:

लग्न में मंगल हो तो स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है, व्यक्ति स्वभाव से उग्र एवं जिद्दी होता है। मंगल के दुःश प्रभाव से पति या पत्नी से दूरियां अथवा तलाक भी हो सकता है! सातवीं दृष्टि के कारण जीवन साथी को किसी धारदार हथियार से चोट की आशंका भी बनी रहती है!

मंगल ग्रह की द्वितीय भाव में स्थिति :

मंगल दुसरे स्थान पर होने से परिवार में सदस्यों की बढ़ोतरी नहीं होती! इस प्रकार या तो विवाह देर से होता है या होता ही नहीं, कई बार विवाह के उपरान्त संतान उत्पत्ति में रुकावट आती है!

मंगल ग्रह की चतुर्थ भाव में स्थिति:

इस घर में मंगल के दुःश प्रभाव से जातक के विवाहित जीवन में आने वाली खुशियाँ मनो खत्म सी हो जाती है, विवाह हो जाने के बावजूद विवाह का सुख नहीं मिलता! चौथे भाव पर मंगल के दुःश प्रभाव से जीवन साथी से दूरियां अथवा तलाक भी हो सकता है!

मंगल ग्रह की सप्तम भाव में स्थिति:

सातवें स्थान में स्थिति मंगल दाम्पत्य सुख (रति सुख) की हानि तथा पत्नी के स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचाता है। इस स्थान में स्थित मंगल की दशवें एवं दूसरे भाव पर दृष्टि पड़ती है। दशम से अजीविका का तथा द्वितीय स्थान से कुटुम्ब का विचार किया जाता है। अतः इस स्थान में स्थित मंगल आजीविका एवं कुटुम्ब पर भी अपना प्रभाव डालता है।

मंगल ग्रह की अष्टम भाव में स्थिति:

कुंडली का आठवां घर जीवन साथी की उम्र से सम्बंधित होता है! इस घर में मंगल के आने से जीवन साथी की कम आयु का खतरा बना रहता है! इस प्रकार आठवें घर में मंगल दोष होने से विवाहित जीवन पर दुःश प्रभाव पड़ता है!

मंगल ग्रह की बारहवें भाव में स्थिति:

जिस जातक की कुंडली के बारहवें घर में मंगल होता है वह जातक अधिक व्याभिचारी होता है, जिस कारण से जातक कई लोगों के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाता है तथा किसी भयंकर गुप्त अंगों की बिमारी से ग्रस्त हो जाता है!

Sanjay मांगलिक विश्लेषण



भाव के आधार पर

राहु आपके कुंडली में चतुर्थ भाव में है।

सप्तम भाव में मंगल अवस्थित है।



दृष्टि के आधार पर

राहु , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को शनि देख रहा है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को राहु देख रहा है।

मंगल की दृष्टि आपके कुंडली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

केतु की दृष्टि आपके कुंडली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को मंगल देख रहा है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव सूर्य से दृष्ट है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव केतु से दृष्ट है।

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत

20.75%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है । कुछ साधारण उपायो की मदद से इसे और कम किया जा सकता है।

Sanjay मांगलिक विश्लेषण



भाव के आधार पर

राहु आपके कुंडली में चतुर्थ भाव में है।

सप्तम भाव में मंगल अवस्थित है।



दृष्टि के आधार पर

राहु , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को शनि देख रहा है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को राहु देख रहा है।

शनि , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

मंगल की दृष्टि आपके कुंडली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

केतु की दृष्टि आपके कुंडली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को मंगल देख रहा है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव सूर्य से दृष्ट है।

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव केतु से दृष्ट है।

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत

26.75%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है और प्रभावी है, मिलान के समय इसका ध्यान रखे। आप मांगलिक हैं।

Sanjay मांगलिक विवरण



कुल मांगलिक प्रतिशत - **20.75%**



Sanjay मांगलिक विवरण



कुल मांगलिक प्रतिशत - **26.75%**



मांगलिक मिलान परिणाम

लड़का मांगलिक नहीं है। लड़की, हालांकि, मांगलिक है। इस अंतर के कारण आपसी असहमति, विवाद, जुदाई, आदि जैसे परिणाम हो सकते हैं। इसलिए, इस सम्बन्ध के लिखी सलाह नहीं दी जा सकती है।

अष्टकूट क्या होता है?

कुण्डली मिलान की अष्टकूट पद्धति में, गुणों की अधिकतम संख्या ३६ है। वर और कन्या के बीच गुण अगर ३१ से ३६ के मध्य में हो तो उनका मिलाप अति उत्तम होता है। गुण अगर २१ से ३० के मध्य में हो तो वर और कन्या का मिलाप बहुत अच्छा होता है। गुण अगर १७ से २० के मध्य में हो तो वर और कन्या का मिलाप साधारण होता है और गुण अगर ० से १६ के मध्य में हो तो इसे अशुभ माना जाता है।

आठो कूट इस प्रकार से हैं - १) वर्ण २) वश्य ३) तारा ४) योनि ५) ग्रह मैत्री ६) गण ७) भकूट और ८) नाडी

वर्ण

वश्य

तारा

योनि

ग्रह मैत्री

गण

भकूट

नाडी

अष्टकूट मिलान विधि:

अष्टकूट मतलब ८ अलग-अलग कुटो का मिलान। इन सभी कुटो के मिलान में जन्म नक्षत्र और जन्म राशि का उपयोग किया जाता है।

अष्टकूट के आठों कूट इस प्रकार हैं :

वर्ण – जातक के वर्ण से उसकी कार्य क्षमता , व्यक्तित्व , आचरण- व्यावहार तथा उससे जुड़ी हुई कई प्रमुख बातों का पता चल जाता है ।

वश्य – वर / कन्या की अभिरुचि तथा शारीरिक ,मानसिक ,भावनात्मक प्रकृति को दर्शाता है ।

तारा – तारा कूट वर – कन्या के वैचारिक मतभेद , विरोधात्मकता , धन की स्थिति व आपसी रिश्तों में सहजता को दर्शाता है ।

योनि – योनी वर - कन्या के आपसी व्यावहार विचार , रहन-सहन ,इत्यादि को दर्शाता है । यह शारीरिक आकर्षण तथा लैंगिक अनुकूलता (मूल वृत्ती) भी दर्शाता है ।

ग्रह मैत्री – यह दर्शाता है वर-कन्या की मनोवृत्ती एवं स्वभाव के तालमेल को । ग्रह मैत्री मनोवैज्ञानिक स्वभाव के विश्लेषण का सबसे अच्छा उपकरण है ।

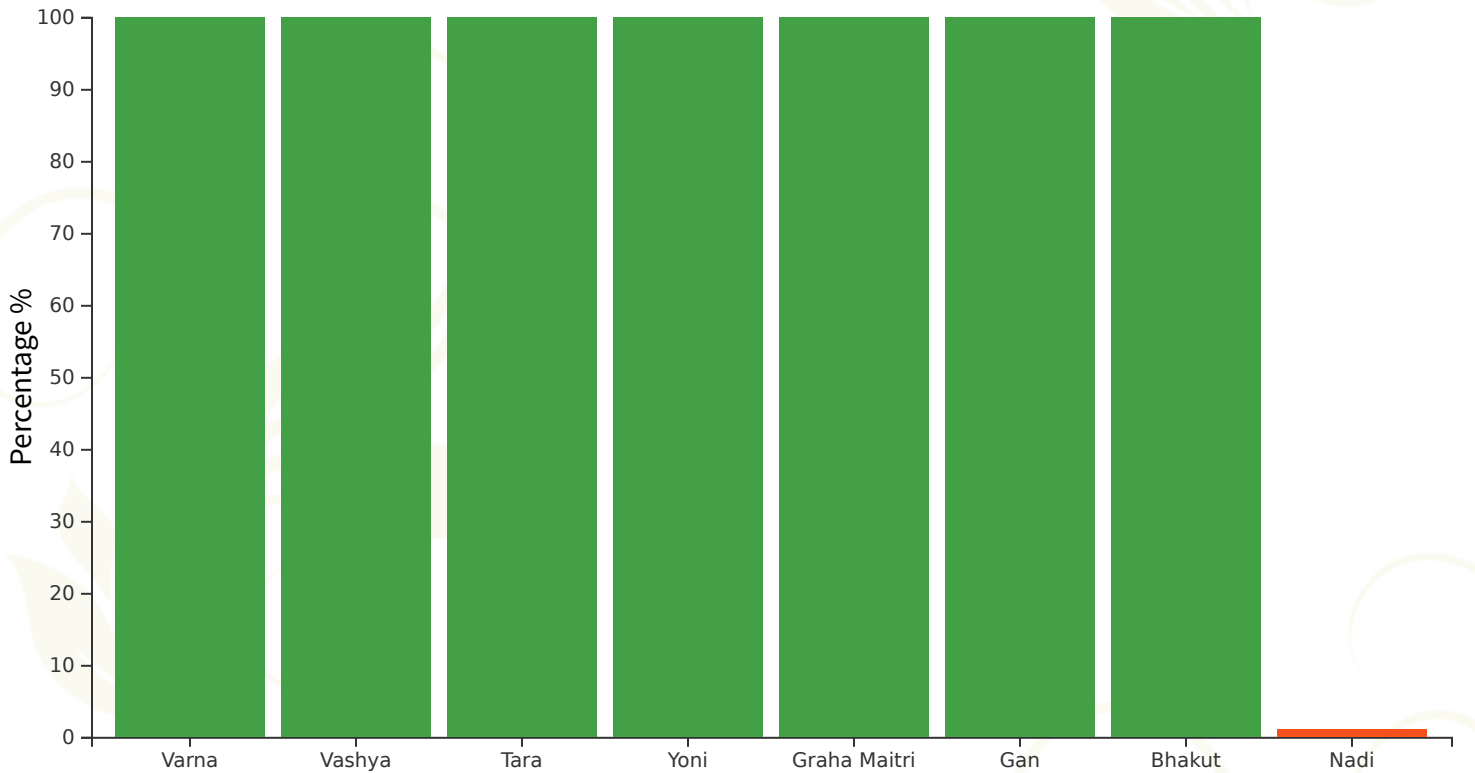
– गण दर्शाता है , परस्पर प्रेम , सामंजस्य , सौमनस्यता, मनोदशा , एक दूसरे के प्रति आकर्षण और लगाव को ।

भकूट – यह दर्शाता है : पारस्परिक आकर्षण , अनुराग , आसक्ति स्नेह एवं रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता ।

नाडी – दर्शाता है – हर्षोउल्लास का संतुलन , नाडी अर्थात – नब्ज जो हमारे शरीर की तांत्रिक उर्जा का प्रतिनिधि होता है तथा स्मरणशक्ति चेतना का संचालन यहीं से होता है ।

अष्टकूट

| गुण | विवरण | पुरुष | स्त्री | कुल | प्राप्त |
|-------------|----------------------------|---------|---------|-----|---------|
| वर्ण | कार्य क्षमता और व्यक्तित्व | वैश्य | वैश्य | 1 | 1 |
| वश्य | व्यक्तिगत संबंध | चतुष्पद | चतुष्पद | 2 | 2 |
| तारा | समृद्धि और भाग्य | मृगशिरा | मृगशिरा | 3 | 3 |
| योनि | अंतरंग सम्बन्ध | सर्प | सर्प | 4 | 4 |
| ग्रह मैत्री | मैत्री मेल | शुक्र | शुक्र | 5 | 5 |
| गण | सामाजिक दायित्व | देव | देव | 6 | 6 |
| भकूट | रचनात्मक क्षमता | वृष | वृष | 7 | 7 |
| नाड़ी | संतान | मध्य | मध्य | 8 | 0 |
| कुल | - | - | - | 36 | 28 |



वेध दोष क्या होता है ?

वेध तकनीक का प्रयोग जोड़ी के पूरी तरह से एक साथ आने से रोकने वाले अत्यधिक अवरोधों के निर्धारण के लिए किया जाता है। रिश्ते को प्रभावित कर सकने वाले दो प्रमुख महा-दोषों में से एक है।

वेध दोष विश्लेषण



उपस्थित नहीं है।

लड़के के नक्षत्र और लड़की के नक्षत्र के बीच में कोई वेध दोष है।

भकूट क्या होता है?

भकूट राशियों के अंतर पर आधारित होता है भकूट का अर्थ ही है , राशियों का समूह भकूट को अधिकतम 7 गुण दिए गए हैं । यह दर्शाता है : पारस्परिक आकर्षण , अनुराग , आसक्ति स्नेह एवं रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता । वर- कन्या की राशियाँ यदि एक दूसरे से 6 - 8 , 5 - 9 या 2 - 12 हो तो भकूट दोष लगता है और 0 (शून्य) अंक प्राप्त होते हैं । उपर्युक्त तीनों दोषों को छोड़कर अन्य सभी जोड़ियों को 7 अंक प्राप्त है ।

भकूट दोष विश्लेषण

Sanjay
वृष

Sanjay
वृष

भकूट दोष उपस्थित नहीं है।

नाड़ी क्या होता है?

नाड़ी : दर्शाता है – हर्षोउल्लास का संतुलन , नाड़ी अर्थात – नब्ज जो हमारे शरीर की तांत्रिक उर्जा का प्रतिनिधि होता है तथा स्मरणशक्ति चेतना का संचालन यहीं से होता है ।

नाड़ियाँ 3 प्रकार की होती है :1) आदय - वात नाड़ी, 2) मध्य - पित्त नाड़ी , 3)अन्य - कफ नाड़ी । वर और कन्या की नाड़ी भिन्न होनी चाहिए । यदि दोनों की नाड़ियाँ एक हुई तो कई दुष्परिणाम देखे जाते हैं , जैसे संतति से संबंधित परेशानियाँ । संतान शारीरिक , मानसिक रूप से अस्वस्थ रहती है , संतान में प्रखर बुद्धि , चेतना स्मरणशक्ति का अभाव रहता है ।

नाड़ी दोष उपस्थित होने पर क्या प्रभाव होता है

गुण मिलान करते समय यदि वर और वधू की नाड़ी अलग-अलग हो तो उन्हें नाड़ी मिलान के 8 में से 8 अंक प्राप्त होते हैं, जैसे कि वर की आदि नाड़ी तथा वधू की नाड़ी मध्या अथवा अंत । किन्तु यदि वर और वधू की नाड़ी एक ही हो तो उन्हें नाड़ी मिलान के 8 में से 0 अंक प्राप्त होते हैं तथा इसे नाड़ी दोष का नाम दिया जाता है। नाड़ी दोष की प्रचलित धारणा के अनुसार वर-वधू दोनों की नाड़ी आदि होने की स्थिति में तलाक या अलगाव की प्रबल संभावना बनती है तथा वर-वधू दोनों की नाड़ी मध्य या अंत होने से वर-वधू में से किसी एक या दोनों की मृत्यु की प्रबल संभावना बनती है।

नाड़ी दोष विश्लेषण

Sanjay
मध्य

Sanjay
मध्य

इस मिलान में नाड़ी दोष उपस्थित है क्योंकि दोनों ही जातकों की नाड़ी सामान है।

नाड़ी दोष कट रहा है क्योंकि पुरुष का नक्षत्र मृगशिरा है स्त्री का नक्षत्र मृगशिरा है।

रज्जु दोष क्या होता है?

This indicates the strength or duration of married life and therefore it merits special attention. The 27 constellations have been grouped into five types of Rajju. Padarajju - Aswini, Aslesha, Makha, Jyestha, Mula, Revati. Katirajju - Bharani, Pushyami, Purva, Anuradha, Poorvashadha, Uttarahadha. Nabhi or Udararajju - Krittika, Punarvasu, Uttara, Visakha, Uttarashadha, Poovabhadra. Kantarajju - Rohini, Aridra, Hasta, Swati, Sravana, and Satabhisha. Sirorajju - Dhanistha, Chitta and Mrigasira. The Janma Nakshatras of the couple should not fall in the same Rajju. If they fall in Sira (head) husband's death is likely; if in Kantha (neck) the wife may die; if in Udara (stomach) the children may die; if in Kati (waist) poverty may ensue; and if in Pada (foot) the couple may be always wandering. Hence, it is desirable that the boy and the girl have constellations belonging to different rajjus or groups for safety in household life.

रज्जु दोष विश्लेषण



शिरो रज्जु

लड़के एवं लड़की का नक्षत्र शिरो रज्जु में पड़ रहा है। शिरोरज्जु की उपस्थिति होने की वजह से पति के जीवन को खतरा हो सकता है।



कार्य क्षमता और व्यक्तित्व वर्ण - 1/1

मेहनती है , परिश्रम से नहीं भागेंगे, अनुभव से हर चीज़ हर कार्य को सफल बनाएँगे । एक-दूसरे का सहयोग जीवन भर मिलता रहेगा । सहयोग द्वारा कार्यशक्ति और बेहतर से बेहतर होगी । सांसारिक एवं भौतिक कार्यों में रुझान अधिक होगा । मानसिक स्थिरता बनी रहेगी ।



व्यक्तिगत संबंध वश्य - 2 / 2

स्वयं का विचार करने वाले , आपसी सहमती शारीरिकमानसिक व भावनात्मक स्तर पर एक-दूसरे के पूरक होंगे। भावनाएँ दोनों की एक-दूसरे से मेल खाएँगी । मानसिक रूप से भीदोनों एक-दूसरे के योग्य होंगे ।



समृद्धि और भाग्य तारा - 3 / 3

धन की स्थिति उत्तम रहेगी । सुख-सुविधा की कोई कमी नहीं रहेगी । धन शलत तरीके से नहीं आएगा । आपसी रिश्तों में तालमेल अच्छा रहेगा । संबंधों में सुख शांति , प्यार मधुरता बनी रहेगी ।



अंतरंग सम्बन्ध योनि - 4 / 4

दोनों एक-दूसरे की भवनाओं का काफ़ी ख़याल रखेंगे । दोनों के बीच आपसी व्यावहार , रहन-सहन , शारीरिक आकर्षण अच्छा रहेगा । प्रेम में मधुरता बनी रहेगी , हर नोक झोक को प्यार की तरह ही लेंगे । एक सच्चे प्रेमी की तरह, दोनों ही एक-दूसरे की चाह को आँखों-आँखों में समझ लेंगे पढ़ लेंगे । संबंध हमेशा उत्तम बना रहेगा । इस वर कन्या की जोड़ी को एक तरह से आदर्श जोड़ी माना जाता है ।

अष्टकूट विश्लेषण - II



मैत्री मेल
ग्रह मैत्री - 5 / 5

सौंदर्य गुणों में समानता होगी । दोनों के विचार समान होंगे । समान रुचि होगी । दोनों के बीच मित्रवत व्यवहार बना रहेगा । आपसी ताल-मेल अच्छा रहेगा । सौंदर्य क्षेत्र, कला क्षेत्र , में विशेष अभिरुचि होगी एवं सफल भी होंगे ।



सामाजिक दायित्व
गण - 6 / 6

अति उत्तम संबंध, परस्पर प्रेम एक-दूसरे की मनोभावनाओं को समझेंगे । एक-दूसरे के बीच सामंजस्य की स्थिति होगी बनी रहेगी । हमेशा एक-दूसरे के प्रति आकर्षण बना रहेगा एवं दोनों एक-दूसरे के लिए बिलकुल उपयुक्त होंगे ।



-->
रचनात्मक क्षमता
भकूट - 7 / 7

परस्पर प्रेम में वृद्धि होती रहेगी । एक-दूसरे के प्रति अनुराग से, प्रेम भरे रहेंगे । संबंध में आकर्षण बना रहेगा । जीवन में नई-नई चीजों का सृजन करेंगे । और मनचाही सफलता भी मिलेगी ।



संतान
नाड़ी - 0 / 8

वैवाहिक जीवन यानी मैरिज लाइफ कष्ट से भरा व दुखदायक रहेगा । संतान विकलांग पैदा हो सकता है या बाद में विकलांग हो सकता है । संतुलन संबंधी समस्याएँ जीवन भर दोनों के बीच बनी रहेगी ।

दोष कट रहा है ? - हाँ

Sanjay व्यक्तित्व विवेचना

तुला लग्न के व्यक्ति आकर्षक, सुसंस्कृत, कुछ मायनों में आकर्षक, विनीत, चित्ताकर्षक, अस्थिरचित्त, सहयोगी, मिलनसार, रचनात्मक, कलात्मक, शायद संगीत के प्रति इच्छुक, सामंजस्यपूर्ण, और दूसरों के लिए समस्या पैदा करने वाले नहीं अपितु उनको प्रसन्नचित्त रखने वाले होते हैं।

आप दूसरों की स्वीकृति और समर्थन चाहने वाले व्यक्ति हैं। आप को दूसरों के साथ की “ज़रूरत” रहती है और अकेले रहना नापसंद करते हैं। आप दूसरों को खुश करने के लिए जीतोड़ मेहनत करते हैं और दूसरों द्वारा पसंद किये जाने अथवा लोकप्रिय होने के लिए स्वयं के सिद्धांतों से भी समझौता कर लेते हैं।

“तब भी आप एक बहुत आत्म केन्द्रित व्यक्ति हैं। किसी को भी “ना” कहना आपके लिए एक कठिन कार्य है। आप को अनियमितता और असंगति बर्दाश्त नहीं होती और आप सब कुछ तैयार, संतुलित, और अविरोध चाहते हैं।

किसी भी बात के लिए आप अपना मन बनाने से पहले विषय के सभी पहलुओं को देखना पसंद करते हैं। आप को चीजों की तुलना करने और उनकी समरूपता खोजने से प्यार है। आप वाद-विवाद का आनंद लेते हैं, तब भी आप उपर से मित्रवत रहते हुए व्यवहारकुशल हो सकते हैं।

सुन्दरता को आप महत्व देते हैं। बिना मेहनत के और भाग्य से मिली सफलता आपको आकर्षित करती है। शुक्र तुला लग्न का स्वामी है इसलिए शुक्र आपकी कुंडली में महत्वपूर्ण है।

Sanjay व्यक्तित्व विवेचना

तुला लग्न के व्यक्ति आकर्षक, सुसंस्कृत, कुछ मायनों में आकर्षक, विनीत, चित्ताकर्षक, अस्थिरचित्त, सहयोगी, मिलनसार, रचनात्मक, कलात्मक, शायद संगीत के प्रति इच्छुक, सामंजस्यपूर्ण, और दूसरों के लिए समस्या पैदा करने वाले नहीं अपितु उनको प्रसन्नचित्त रखने वाले होते हैं।

आप दूसरों की स्वीकृति और समर्थन चाहने वाले व्यक्ति हैं। आप को दूसरों के साथ की “ज़रूरत” रहती है और अकेले रहना नापसंद करते हैं। आप दूसरों को खुश करने के लिए जीतोड़ मेहनत करते हैं और दूसरों द्वारा पसंद किये जाने अथवा लोकप्रिय होने के लिए स्वयं के सिद्धांतों से भी समझौता कर लेते हैं।

“तब भी आप एक बहुत आत्म केन्द्रित व्यक्ति हैं। किसी को भी “ना” कहना आपके लिए एक कठिन कार्य है। आप को अनियमितता और असंगति बर्दाश्त नहीं होती और आप सब कुछ तैयार, संतुलित, और अविरोध चाहते हैं।

किसी भी बात के लिए आप अपना मन बनाने से पहले विषय के सभी पहलुओं को देखना पसंद करते हैं। आप को चीजों की तुलना करने और उनकी समरूपता खोजने से प्यार है। आप वाद-विवाद का आनंद लेते हैं, तब भी आप उपर से मित्रवत रहते हुए व्यवहारकुशल हो सकते हैं।

सुन्दरता को आप महत्व देते हैं। बिना मेहनत के और भाग्य से मिली सफलता आपको आकर्षित करती है। शुक्र तुला लग्न का स्वामी है इसलिए शुक्र आपकी कुंडली में महत्वपूर्ण है।

विशेषता - लक्षण

सकारात्मक लक्षण



Sanjay



आकर्षक

सरल व्यक्तित्व

रोमानी

आदर्शवादी

Sanjay



आकर्षक

सरल व्यक्तित्व

रोमानी

आदर्शवादी

नकारात्मक लक्षण



Sanjay



अनिर्णायक

चिंतित

आसानी से प्रभावित

तिकड़मबाज

Sanjay



अनिर्णायक

चिंतित

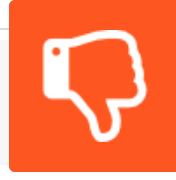
आसानी से प्रभावित

तिकड़मबाज



अष्टकूट

लड़का और लड़की की कुंडलियों के अष्टकूट मिलान से उन्हें 36 अंकों में से 28 अंक प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा, इनके राशि स्वामी भी एक दूसरे के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखते हैं - जिससे दोनों के बीच मानसिक अनुकूलता और आपसी स्नेह बना रहेगा। इसलिए, यह एक सकारात्मक मेल कहा जा सकता है।



मांगलिक

लड़का मांगलिक नहीं है। लड़की, हालांकि, मांगलिक है। इस अंतर के कारण आपसी असहमति, विवाद, जुदाई, आदि जैसे परिणाम हो सकते हैं। इसलिए, इस सम्बन्ध के लिखी सलाह नहीं दी जा सकती है।

मिलान निष्कर्ष



“ मंगल दोष मौजूद है; तथापि, अन्य कारकों के विश्लेषण के आधार पर, हम यह परामर्श करते हैं आप मंगल दोष निवारण हेतु सुझाए गए उपचारों का पालन करने के बाद ही विवाह के लिए आगे बढ़ सकते हैं।



— ~ —
vedicrishi
— ~ —

Vedic Rishi Astro Pvt. Ltd.

<https://vedicrishi.in/>

+91 - 221232 22

mail@vedicrishiastro.com